ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 82-84

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

महिला उपन्यासकार की साहित्यिक अभिव्यक्ति

निधि श्रीवास्तव
शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, नई बाजार, बक्सर (बिहार), भारत

सारांश : *महिला उपन्यासकारों की साहित्यिक अभिव्यक्ति सामाजिक रूढ़ियों, विसंगतियों, कुप्रथाओं के प्रति निश्चित रूप से विद्रोहात्मक रूप में तो है, साथ ही युगीन बोध के अनुरूप सापेक्ष परिलक्षित होती है। कृष्णा सोबती एक महत्वपूर्ण लेखिका रही है। उनकी महत्वपूर्ण रचनाएं हैं: 'डार से बिछुडी', थारों के यार, मित्रों मरजानी, जिन्दगीनामा, 'सूरजमुखी अंधेरे के', दिलोदानिश इत्यादि। 'डार से बिछुडी' उपन्यास के माध्यम से स्त्री पात्र पाशों नामक युवती के शोषण के सिलसिले को प्रस्तुत किया गया है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' में लेखिका ने सेक्स तक सीमित प्रेम के स्वरूप को उजागर किया है। नारी मन की सूक्ष्म भावानाओं के साथ साथ उसके देह की जरूरतों का भी मनोवैज्ञानिक अंकन किया गया है। उसमें काम विकृति बचपन में बलात्कार हो जाने के कारण हो जाती है। वह अनेक पुरूषों के संपर्क में आने पर भी पूर्ण संतुष्ट नहीं हो पाती। "स्त्री के जीवन में एक के बाद एक पुरूष आते रहते हैं। वह एक ऐसी सड़क है जिसका कोई अंतिम छोर नहीं है।" उपन्यास के अंत मे दिवाकर से उसे पूर्ण संतुष्टि मिलती है तथा वह उसके प्रति पूर्ण समर्पित हो जाती है। उपन्यास में सेक्स का खुला व्यापक चित्रण हुआ है। 'मित्रो मरजानी' एक विवादास्पद उपन्यास है। यह मित्रो नामक एक युवती की कथा है। जो परंपरागत बंधनों में रहना अस्वीकार करती है। उसे दबे–ढके रहने का तौर तरीका नापसंद है। वह अपनी अतृप्त यौवनेच्छाओं का खुलेआम सबके सामने प्रस्तुत करती है। परंतु अंत में वह अपने पति के पास लौट आती है, जिससे कोमल हृदय के दर्शन होते है। शशि प्रभा शास्त्री ने लिखा है– "यहां नारी आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार की भावनाओं से लड़ती है, नारी मन की अतृप्ति–तृप्त न हो पाने की कथा–कथा को जिस मार्मिकता व अनूठी कलाकार शैली में व्यक्त किया गया उसके लिए सोबतीजी साधुवाद की अधिकारिणी है। ऐसी महिला के चरित्र का चरम उसकी उस उदात्ता में द्रष्टव्य है, जब वह अपनी अनुलीन मां का उसके पास रहने का प्रस्ताव ठुकराकर वापस अपने ससुराल लौट जाती है। नारी के चरित्र का यह छूपछाही रंग उपन्यास को आधुनिक नारी से जोड़ता है।"*

कुंजीभूत शब्द– साहित्यिक अभिव्यक्ति, सामाजिक रूढ़ियों, विसंगतियों, कुप्रथाओं, विद्रोहात्मक, परिलक्षित ।

मेहरून्निसा परवेज, के आंखों की दहलीज, कोरजा, अकेला पलाश, उसका घर उपन्यास प्रसिद्ध है। 'उसका घर' उपन्यास नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास में परस्पर विरोधी दो नारी रूप शोषण का शिकार होने वाली स्त्री तथा अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत स्त्री सक्षमता के साथ प्रस्तुत किये गये हैं। पात्र एलम्म ऐसी स्त्री है, जो अपने भाई द्वारा मात्र कुछ रूपयों के लिए अपने बॉस के पास भेजी जाती है वह बीमार की हालत में भी अपने बॉस की काम इच्छा की पूर्ति करती दिखाई देती है। दूसरी तरफ रेशमा का चरित्र है, जो अविवाहित ही मां बनती है तथा बहन के द्वारा दिये गये विवाह के सुझाव को भी अस्वीकार करती है। डॉ. उषा यादव, "रेशमा अपने हिन्दू प्रेमी की प्रेमिका तथा एक बच्चे की बिनब्याही मां होते हुए भी पश्चाताप के स्थान पर अधिकारों की मांग करती है।" आंखों की दहलीज उपन्यास में मां नहीं बन सकने वाली एक नारी पात्र को चित्रित किया गया है। तालिया की मां अपनी बेटी की संतान की आशा में स्वयं उसका मिलन जावेद नामक अन्य पुरूष के साथ करा देती है। घटना से पीड़ित होकर तालिया आत्महत्या का प्रयास करती है। "पति या प्रेमी मे से किसी एक को चुने, उसकी दुविधा यही है। बच जाने पर दोनों को छोडकर वह किसी अंजान दिशा में चल देती है।' अकेला पलाश उपन्यास में एक ऐसे स्त्री पात्र तहमीना को चित्रित किया गया है, जो महिला मंडल की चैयरमैन है और भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील भी। एक पुत्री की मां होते हुए वह अपने दाम्पत्य जीवन में आए एक शून्य के कारण तुषार नामक पुरूष से संपर्क स्थापित करती है। यह संबंध उसकी आवश्यकता बन जाता है। "तहमीना के जीवन में" अन्य पुरूष का प्रवेश उसके जीवन की आवश्यकता के रूप में चित्रित हुआ है। तहमीना अपने पति से मानसिक एवं भौतिक धरातलों पर संतुष्ट नहीं होती, तब वह तुषार नामक एक अन्य पुरूष के सहचर्य में पहली बार अपनी

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

वांछित मानसिक तृप्ति को प्राप्त करती है।''

उषा प्रियंवदा के 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' रूकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा महत्वपूर्ण उपन्यास है। शेषयात्रा उपन्यास की नायिका अनु एक ऐसी स्त्री पात्र है, जो अपने पति से तलाक मिलने के पश्चात् हिम्मत रखते हुए अपनी जीवन स्वतंत्र रूप से नए सिरे से जीती है। उपन्यास में अमेरिका में स्थित एक प्रवासी भारतीय दंपती को चित्रित करते हुए पीड़ित व शोषित नारी का चरित्र प्रस्तुत है। उषा जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मध्यमवर्गीय नारी की भावनाओं को एक वाणी देने का प्रयास किया है। 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा अपने परिवार के दायित्व के लिए अपनी इच्छाओं का त्याग कर देती है। अपनी विषम परिस्थितियों के चलते वह नील के प्रेम को भी अस्वीकार कर देती है। डॉ. उषा यादव के अनुसार ''इसकी कथा नायिका सुषमा आज के परिवर्तित परिवेश में पारिवारिक उत्तरदायित्वों का वहन करती संघर्षों के उत्तप से पल पल झुलसती और बदली सामाजिक मान्यताओं के तहत एक नयी प्रेमवृति का पोषण करती दिखाई देती है।''[1]

शशि प्रभा शास्त्री के उपन्यास नावें, सीढ़ियां, परछाईयों के पीछे, वीरान रास्ते और झरना, क्योंकि, 'उम्र एक गलियारे की' महत्वपूर्ण है। नावें उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्र मालती संपूर्ण दायित्वों को वहन करती है। वह परिवार का संपूर्ण दायित्व उठाती है। नौकरी के साथ अतिरिक्त कार्य भी करती है। परिवार वाले उससे सिर्फ वेतन तक का संबंध रखते है। संपूर्ण उपन्यास में उसकी उपेक्षा होती है। वह आर्थिक, शारीरिक तथा मानसिक शोषण का शिकार होती है। ''मालती एक ऐसा है, जो अपने प्रेमी के द्वारा विवाह के इंकार पर उसके बच्चे को साथ लेकर अन्य पुरूष के साथ विवाह करके प्रेम की नवीन व्याख्या प्रस्तुत करता है। मालती को विवाह पूर्व मातृत्व की स्थिति में जब उसका प्रेमी उससे विवाह करने से अस्वीकार कर देता है। तब वह उसे त्याग कर एक दूसरे पुरूष से विवाह कर लेती है।,''[2] 'सीढ़िया' उपन्यास में नारी के पहचान को दिशा दी गई है। मनीषी ऐसी नारी पात्र है जो निराश्रित होते हुए भी अपनी पढ़ाई पूर्ण करके डॉक्टर बनती है तथा अपनी अलग पहचान बनाती है, परंतु वह अपने से कम उग्र का होने से नायक से प्रेम करते हुए भी विवाह नहीं कर पाती। उपन्यास में सुशिक्षित तथा आत्मनिर्भर नारी का द्वंद्व है।

'परछाइयों के पीछे' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने स्त्री पुरूष संबंधों की वास्तविकता को उजागर करने का प्रयत्न किया है। स्त्री की परंपरागत तथा आधुनिक मूल्यों के बीच फंसे होने की व्यथा हैं। सुमित्रा एक ऐसी नारी है जो नौकरी पेशा होते हुए भी अपने पति के पाश्विक अत्याचार सहने को मजबूर है। वह एक समय पर तलाक की स्थिति तक पहुंचती है, परंतु उसके परंपरागत संस्कार उसे रोक देते हैं। डॉ. उषा यादव ने लिखा है, ''सुमित्रा कानूनी कार्यवाही करके तलाक लेने का निर्णय करती है। बडी बेटी माला का भागकर आना, पिता की काली करतूतों का भंडाफोड़ करना, दूसरी औरत रख लेने की सच्चाई को अनुमोदन करना, सुमित्रा के निर्णय को और दृढ़ बना देता है, लेकिन एक वक्त पर वह खुद मुकदमा दायर करने से इंकार कर देती है। उसे लगता है उसके बच्चों के स्वस्थ पालन–पोषण के लिए माता पिता का साया होना जरूरी है।''[3] 'एक उग्र गलियारे' की उपन्यास में नायिका सुनंदा के विचार प्रदर्शित होते है कि जीवन साथी चुनने का अधिकार स्त्री को भी प्राप्त होना चाहिए। वह देवेश से विवाह प्रस्ताव ठुकराकर नवल से विवाह करती है तथा फिर पति से पीड़ित होकर अलग हो जाती है। अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत नारी का चित्रण उपन्यास में हुआ है।

दीप्ति खण्डेलवाल ने भारतीय नारी के त्याग, कपट, स्नेह, पति परायणता आदि गुणों को उभारने की चेष्टा की है। उन्होंने वर्तमान को निकट से देखा तथा समझा हैं, 'प्रिया, वह तीसरा, कोहरे और प्रतिध्वनियां आदि उनके चर्चित उपन्यास है। उनके उपन्यास आज के मनुष्य की तटस्थता है। 'प्रिया' उपन्यास में नायिका प्रिया के अभिशप्त जीवन की कहानी है, जो पूर्व विवाहित प्रेमी द्वारा त्याग दी जाती है। लेखिका के अपने शब्दों में– प्रिया एक ऐसी अभिशप्त नारी की कहानी है, जो देवदास को पाकर भी पारो न बन सकी और जब उसने पारो बनना चाहा तो उसे देसदास नहीं मिला। प्रिया का नारीत्व कामना बनकर रह जाता है। प्रेम के बदलते हुए स्वरूपों को इस उपन्यास में अत्यधिक स्थान मिला। 'वह तीसरा' उपन्यास की नायिका रंजिता विवाहित है। प्रेम की समस्या को उपन्यास में व्यक्त किया गया है। पति–पत्नि के बीच प्रेम है रोमांस है, परंतु अनायास ही 'वह तीसरा' अर्थात् अहम दोनों के बीच आ जाता है। दोनों के बीच औपचारिकता बढ़ जाती है तथा प्रेम का मोहभंग हो जाता है। एक दिन पति के कमरे में मिस रूबी को पाकर वह बौखला जाती है तथा तनाव और अधिक बढ़ जाता है। 'कोहरे' उपन्यास में नायिका दाम्पत्य जीवन से घुटती हुई,1 परेशान रहती है तथा पति से तलाक लेकर अपने प्रेमी से विवाह करने में सफल हो जाती है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में नई पीढी तथा सोच की विचारधारा को प्रस्तुत किया है। नई पीढ़ी के लड़के–लड़कियां विवाह तथा प्रेम संबंधों में अधिक स्वच्छंद है। वे स्वयं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

कहती हैं– मानव की संज्ञा के अंतर्गत होने पर भी स्त्री पुरूष अपने अपने विशेषण में नितांत भिन्न होते हैं। एक ऐसे पंचतत्वों से निर्मित उनका शरीर भी एक जैसा कहां होता है, संवेदना की भूमि पर भी वे अलग अलग खड़े होते है। अनुभति के स्तर पर प्रेम नारी और पुरूष में एक जैसा स्पंदित हो भी ले, किंतु अपनी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं में भिन्न हो उठता है। जैसे प्रेम पुरूष में अधिकार बनता है और नारी और नारी में समर्पण।

मालती जोशी के सहचारिणी, राग विराग, समर्पण का सुख, ऋणानुबंध उपन्यास महत्वपूर्ण है।' 'राग विराग' में मुख्य स्त्री पात्र कल्याणी के जीवन का द्वन्द्व है। कल्याणी गायन के क्षेत्र में परिष्कृत कलाकार हैं, विवाह के पश्चात् वह अपनी कला को छोड़कर पति के प्रति समर्पित हो जाती है, परंतु पति की बेरोजगारी, सास, ननद तथा पति द्वारा दिये जाने वाले अत्याचार, तथा चरित्र पर किये गये संदेह से वह अपना मानसिक संतुलन खो देती है, लेकिन अपनी इस स्थिति से संभलकर वह अपना जीवन संगीत की सेवा में लगा देती है। डॉ. अमरज्योति, "वह गृहस्थी के शोषणपूर्ण वातावरण से निकलकर अपने शेष जीवन को संगीत कला के माध्यम से सार्थक करना चाहती है। वह अपने इस प्रयास में सफल होती है। वह अन्ततः स्वतंत्रता का मार्ग चुनती है और पारिवारिक बंधन से मुक्त होकर अपना पृथक जीवन जीती है।"[4] सहचारिणी उपन्यास में नायिका नीलिमा है, वह एक ऐसी नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है जिसकी मानसिकता वैवाहिक जीवन को समाप्त कर शोषण से मुक्त होने की है। नीलिमा और योगेश का दाम्पत्य जीवन तनावग्रस्त हैं। तथा जीवन में मनमुटाव बढ़ने लगा। नीलिमा का पति इस तनावग्रस्तता की स्थिति में उसकाश्शोषण करता है। अंत में नीलिमा चार वर्ष के वैवाहिक जीवन से मुक्ति पाती है तथा शोषण से मुक्त होती है। 'ऋणानुबंध' मालती जोशी का एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें विधवा नारी का चित्रण है जिसका संबंध उपन्यास की नायिका के पति के साथ है वह इस संबंध को बिना किसी सामाजिक संबंध को स्वीकार करते हुए आजीवन मात्र पैसे कमाने की मशीन बनकर रह जाती है। उसका पति भी उसकी आय पर निर्भर करता है।

मंजुला भगत के 'अनारो', टूटता हुआ इंद्रधनुष, तिरछी बोछार आदि उपन्यास प्रसिद्ध है।' मंजुला भगत के उपन्यासों की नारियां स्वाभिमानी हैं, तथा अपने अहं की रक्षा करती है। अनारों मे घरेलू कामकाज वाली नारियों की चेतना प्रस्तुत की गई है। नायिका कहती है, तुम मुत काम नहीं कराते, तो हम भी हराम की नहीं लेते। हाथ गोड़ तोड़ कमाते है।'[5] उपन्यास की नायिका अनारों श्रमिक वर्ग की हैं वह जीवन की परिस्थितियों को साहस से हल करती है। उसमें जीवन जीने की जीजिविषा है। पति की उपेक्षा के बावजूद वह अपने बच्चे का पालन पोषण करती है तथा उसके विवाह के लिए साधन जुटाती है। निम्न वर्ग की होने के बावजूद उसमें प्रदर्शन प्रवृति है। बड़े बड़े घरों में वह बर्तन साफ करके अपना पेट पालती है। उनका प्रदर्शन देखकर अपनी बेटी मंजी के विवाह में खुल्ला खर्चा करना चाहती है। इस खर्च के लिए वह भूखी रहकर ऋण लेती है। इस कर्ज से उसकी खूब प्रशंसा होती है। प्रशंसा से प्रेरित होकर वह दुगुने साहस से कार्य करके कर्जा चुकाने के लिए सक्रिय होती है। उसने तो विदा करते समय सबके हाथ पर संबंध और पद के अनुरूप पांच और दस के नोट भी रखे थे। सामाजिक रूढ़ियों का पालन करके वह खुश है। उसे भूखी रहने तथा भागदौड़ के कारण एनीमिया हो जाता हैं। लेखिका ने निम्न वर्ग के एक अहसास को व्यक्त करने का प्रयत्न किया है।

'टूटा हुआ इंद्रधनुष' एक त्रिकोणात्मक प्रेम पर आधारित उपन्यास है। प्रभात की पत्नी शोभना से मनीष प्यार करता है तथा उसकी अनुपस्थिति में शोभना का पूरी तरह प्राप्त कर लेता है जिसकी परिणति पुत्री संध्या के रूप में होती हैं। प्रभात को इस घटना का ज्ञान होने पर वह इसे सामान्य रूप में लेता है। जब मनीष का विवाह अर्चना से हो जाता है तथा उसे पता लगता है कि संध्या मनीष की बेटी है तो वह उसे शोभना से मांगने जाती है। फिर अर्चना, प्रभात को राखी बांधकर भाई बना लेती है और मनीष तथाशोभना की वासनाएं समाप्त होती है। इस त्रिकोणात्मक प्रेम का प्रस्तुतीकरण नये रूप में किया गया है।

इस प्रकार स्वातन्थ्योत्तर उपन्यासों में पुरूष के साथ साथ महिला सृजन भी हुआ है तथा नारी की सामाजिक स्थिति का पता इन उपन्यासों से चलता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चितकोबरा – मृदुला गर्ग ।
2. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि – डॉ. अमर ज्योति पृ. 93.
3. मंजुला भगत – अनारो उपन्यास
4. हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना–डॉ. ऊषा यादव पृ. 83.
5. वही, पृ. 82.

*****